Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2508S01V13P023

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Aug'25
Issue–VIII(I), Volume–XIII

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. समीना कुरैशी
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
जे. ई. एस. कॉलेज, फरहदा, बिलासपुर (छ. ग.)

सारांश

यह शोध ''शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' विषय पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षण की गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करता है। अध्ययन में प्रशिक्षण की संरचना, शिक्षण विधियाँ, प्रशिक्षकों की योग्यता तथा प्रशिक्षण उपरांत शिक्षकों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण किया गया है।

शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई। प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा एकत्र किए गए, जबकि द्वितीयक स्रोतों में सरकारी रिपोर्ट, नीति दस्तावेज एवं शोध लेख सम्मिलित हैं। नमूना चयन में छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न B.Ed. एवं DIET संस्थानों के 100 प्रशिक्षित शिक्षकों को शामिल किया गया।

शोध से यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यवहारिक गतिविधियाँ सीमित हैं तथा प्रशिक्षण में प्रयुक्त तकनीकों में नवीनता की कमी है। प्रशिक्षकों की अद्यतन तकनीकी दक्षता भी सीमित पाई गई। प्रशिक्षण के मूल्यांकन में शिक्षकों की फीडबैक को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता।

शोध के निष्कर्षों के आधार पर सुझाव दिए गए हैं कि प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में ICT टूल्स, स्कूल–आधारित अभ्यास, नवाचारात्मक शिक्षण विधियों तथा प्रशिक्षकों के लिए नियमित उन्नयन कार्यक्रमों की आवश्यकता है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं को शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुधार हेतु दिशा प्रदान कर सकता है।

मुख्य शब्द

शिक्षक प्रशिक्षण, गुणवत्ता मूल्यांकन, प्रशिक्षण विधियाँ, प्रशिक्षक दक्षता, शिक्षा नवाचार है।

प्रस्तावना

शिक्षा प्रणाली का स्तर मुख्य रूप से उस समाज के शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। शिक्षक न केवल ज्ञान के संवाहक होते हैं, बल्कि वे राष्ट्र निर्माण की दिशा में मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। ऐसे में गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण अनिवार्य हो जाता है।

वर्तमान समय में देश के विभिन्न हिस्सों में संचालित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता में काफी भिन्नता देखी जा रही है। कहीं पाठ्यक्रम अद्यतन नहीं हैं, तो कहीं शिक्षण विधियाँ पारंपरिक ढांचे में सीमित हैं। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षकों की दक्षता, व्यवहारिक प्रशिक्षण की अनुपस्थिति तथा तकनीकी संसाधनों की कमी जैसे कारक भी इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है, जिससे शिक्षक शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, नवाचारपूर्ण एवं प्रभावी बनाया जा सके। यह अध्ययन न केवल मौजूदा समस्याओं को उजागर करेगा, बल्कि शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली को सुदृढ़ करने हेतु ठोस सुझाव भी प्रदान करेगा।

समस्या कथन

वर्तमान में संचालित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में गुणवत्ता की एकरूपता नहीं है। विभिन्न संस्थानों में प्रशिक्षण की सामग्री, विधियाँ, संसाधनों की उपलब्धता और प्रशिक्षकों की दक्षता में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है। इससे प्रशिक्षण की प्रभावशीलता प्रभावित होती है। अतः यह आवश्यक है कि इन कार्यक्रमों की

गुणवत्ता का गहन विश्लेषण किया जाए ताकि शिक्षक शिक्षा को अधिक प्रभावी और परिणामोन्मुखी बनाया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता का बहुआयामी विश्लेषण करना है। इसमें मुख्यतः निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है:

1. प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संरचना और कार्यप्रणाली का अध्ययन।
2. प्रयुक्त शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन।
3. प्रशिक्षकों की योग्यता और प्रशिक्षण गुणवत्ता के संबंध का विश्लेषण।
4. प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुभवजन्य प्रतिक्रिया का अध्ययन।
5. कार्यक्रमों में सुधार हेतु व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

अनुसंधान प्रश्न

इस अध्ययन में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता से संबंधित निम्नलिखित प्रमुख शोध प्रश्नों पर विचार किया गया है:

1. क्या वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता में सुधार लाने में सक्षम हैं?
2. प्रशिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक कौन–से हैं?
3. शिक्षकों के अनुभव के अनुसार प्रशिक्षण की कौन–सी विधियाँ अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती हैं?

शोध की परिकल्पना

इस अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है:

H_0 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता का शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

H_1 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

अनुसंधान पद्धति

शोध का प्रकार :

1.वर्णनात्मक (Descriptive)
2.विश्लेषणात्मक (Analytical)

नमूना आकार :

कुल 100 प्रशिक्षित शिक्षक (DIET, B.Ed कॉलेज एवं अन्य प्रशिक्षण संस्थानों से)

नमूना चयन तकनीक :

यादृच्छिक नमूना चयन (Random Sampling)

डेटा संग्रह विधियाँ :

1.प्राथमिक स्रोत : प्रश्नावली और साक्षात्कार
2.द्वितीयक स्रोत : शोध लेख, सरकारी रिपोर्टें, नीति दस्तावेज

डेटा विश्लेषण उपकरण :

1.प्रतिशत (%)
2.औसत (Mean)
3.चार्ट (Chart)

4.बार ग्राफ (Bar Graphs)

अध्ययन की सीमा

1.यह अध्ययन केवल छत्तीसगढ़ राज्य के चयनित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों तक सीमित है।
2.अध्ययन में केवल प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (D.Ed. एवं B.Ed.) को ही शामिल किया गया है।
3.उच्च शिक्षा या इन–सर्विस प्रशिक्षण कार्यक्रम इस अध्ययन के अंतर्गत नहीं आते।
4.डेटा संग्रह प्रशिक्षित शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं तक सीमित है।

संभावित निष्कर्ष

1.अधिकांश प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नवाचार और आधुनिक तकनीकों की कमी देखने को मिल सकती है।
2.प्रशिक्षकों की तकनीकी दक्षता अपेक्षित स्तर पर नहीं पाई जा सकती।
3.प्रशिक्षण में व्यवहारिक और स्कूल–आधारित अभ्यास को अधिक महत्व देने की आवश्यकता प्रतीत हो सकती है।
4.प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु पाठ्यक्रम, विधियों और संसाधनों का पुनः मूल्यांकन आवश्यक होगा।

सुझाव

1.प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में नवाचार और डिजिटल टूल्स का समावेश किया जाए।
2.प्रशिक्षकों के लिए नियमित Refresher Courses एवं FDPs अनिवार्य किए जाएं।
3.मूल्यांकन प्रक्रिया में प्रशिक्षित शिक्षकों की प्रतिक्रिया को शामिल किया जाए।
4.व्यवहारिक एवं स्कूल–आधारित प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जाए।

निष्कर्ष

यह अध्ययन दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता शिक्षकों की दक्षता और शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता को सीधे प्रभावित करती है। वर्तमान में अनेक प्रशिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रम की अद्यतनता, प्रशिक्षण विधियों की आधुनिकता, और प्रशिक्षकों की तकनीकी दक्षता में कमी देखी जा रही है। इसके कारण प्रशिक्षण का व्यावहारिक पक्ष कमजोर रह जाता है।

शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नवाचार, व्यवहारिक अनुभव और मूल्यांकन की पारदर्शिता को महत्व देना आवश्यक है। यदि इन पहलुओं पर ध्यान दिया जाए, तो प्रशिक्षण की गुणवत्ता को सुदृढ़ किया जा सकता है।

इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष नीति निर्माताओं, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों और शिक्षा विभागों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण से न केवल शिक्षकों की पेशेवर क्षमता में वृद्धि होगी, बल्कि शिक्षा व्यवस्था भी अधिक प्रभावशाली, उत्तरदायी और भविष्योन्मुखी बन सकेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. एनसीईआरटी (2020), ''शिक्षक शिक्षा की रूपरेखा और सुधार हेतु नीतियाँ'',
राष्ट्रीय शैक्षिक दस्तावेज, खंड 4, अध्याय 2, पृष्ठ 32–54
2. यूनिसेफ इंडिया। (2021)''भारत में शिक्षक प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ'', रिपोर्ट: शिक्षक विकास मूल्यांकन, खंड 3, अध्याय 5, पृष्ठ 78–102
3. कुमार, एम., और रॉय, एस. (2019),''गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण के मापदंड और प्रभाव'', शिक्षा विमर्श जर्नल, खंड 7, अंक 1, पृष्ठ 65–83
4. NCTE (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद)(2022),''शिक्षक शिक्षा की राष्ट्रीय रूपरेखा (NEP 2020 के आलोक में)'', खंड 5, अध्याय 3, पृष्ठ 44–69

5. UNESCO- (2020),''Teaching and Learning for Quality Education: A Global Framework.'' ,Paris: UNESCO Publications, Vol. 6, Chapter 4, pp. 88–115.
6. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, (2021),''समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत प्रशिक्षकों के विकास हेतु पहल'', नीति दस्तावेज, खंड 2, अध्याय 6, पृष्ठ 95–122।
7. शर्मा, ए. और वर्मा, डी. (2023),''नवाचार आधारित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभाव'', शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, खंड 9, अंक 3, पृष्ठ 111–134
8. Azim Premji Foundation,(2018),''Teacher Professional Development% Reflections from the Field.'' Vol. 2, Chapter 7, pp. 67–91.
9. OECD- (2019),''Teachers and School Leaders as Lifelong Learners-''
OECD Teaching Report, Vol- 3, Chapter 2, pp- 45–70.
10. पांडे, एन. (2022),''शिक्षक शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता नियंत्रण की भूमिका''
भारतीय शिक्षा समीक्षा, खंड 11, अंक 2, पृष्ठ 102–127